B.A. Part II संस्कृत (सम्मान)

22 जुलाई, 2020

श्लोकसंख्या -18

काश्यपः - सा त्वमितः पतिकुलं प्राप्य -

"शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने भर्तुर्विप्रकृताऽपि
रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवं
गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ।।"

~~शब्दार्थ~~ -(शब्दार्थ) =

गुरून् = परिवारस्य पूज्यान् = परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को।
शुश्रूषस्व = सेवस्व = (तुम) सेवा करना।
सपत्नीजने = समानपतिकायाम् = सपत्नियों में। (सपत्नीवर्गे)
प्रियसखीवृत्तिं = प्रियसख्याः व्यवहारम् = प्रिय सखी समान व्यवहार करना।
कुरु = विधेहि = करो (तुम/शकुन्तला)। विप्रकृता अपि = तिरस्कृता/अनादृता
अपि = तिरस्कृत अथवा अनादृत होकर भी। रोषणतया = क्रोधावेगेन
= क्रोध के आवेग में आकर। भर्तुः = पत्युः = स्वामी (पति)। प्रतीपं =
विपरीतम् = प्रतिकूलम् = विपरीत (कार्य) को। मा स्म गमः = न याहि = नहीं जाना।
परिजने = आश्रितवर्गे = परिवार के अपने आश्रितों पर। भूयिष्ठम् = अत्यधिकम्
(बहुत अधिक)। दक्षिणा = उदारा ~~भव~~ = उदार (कृपा बनाए रखना)। भाग्येषु = समृद्धिषु =
अनुकूल धन-धान्य की अवस्था में। अनुत्सेकिनी = गर्वरहिता भव = अहङ्काररहित
बनना (रहना)। एवम् = इत्थमाचरणेन = इसप्रकार के व्यवहार से।
युवतयः = रमण्यः = रमणियाँ। गृहिणीपदं = गृहलक्ष्मीस्थानम्
= गृहलक्ष्मी के पद को। यान्ति = प्राप्नुवन्ति। वामाः = प्रतिकूलाः स्त्रियः।
कुलस्य = वंशस्य = वंश का। आधयः = दुःखस्य हेतोः भवन्ति = दुःख का
हेतु (कारण) होती हैं।

हिन्दी अनुवाद-

प्रसङ्ग - काश्यपऋषि शकुन्तला के प्रति कथन को अभिव्यक्त करते हैं -
तुम यहाँ से पतिगृह (घर) जाकर -

पतिगृह जाती हुई पुत्री को पिता द्वारा दिए गए मनोहर तथा प्रेरक
ये उपदेश हैं।

अपने (परिवारके) वरिष्ठ पूज्यजनों की सेवा करना, अपनी सपत्नियों से प्रिय मित्र समान आचरण करना, अनादृत होने पर भी क्रोध के आवेग में आकर पति के विपरीत कार्य मत करना, अपने (परिवारके) पर निर्भर रहने वालों पर अत्यन्त कृपा बनाए रखना, अपने ऐश्वर्य का अहङ्कार मत करना, इसप्रकार आचरण करनेवाली स्त्रियाँ गृहलक्ष्मी (गृहिणी) के पद पर सुशोभित होती हैं और इसके प्रतिकूल कार्य करने वाली वंश के लिए दुःख का कारण होती हैं।

व्याकरणस्य भागः

(क) शुश्रूषस्व -(सेवा करना) - श्रु + सन् + लोट् लकार म०पु० एकवचनम्।
"ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः" सूत्र से सन् प्रत्यय का योग श्रु धातु से होने पर यह धातु आत्मनेपदी होजाती है।

(ख) प्रियसखीवृत्तिम् = प्रियायाः सख्याः वृत्तिम्, तत्पुरुषसमासः।

(ग) सपत्नी - समानः पतिः यासां ताः सपत्न्यः।
जिनके समान पति हों, वे सपत्नी (सौत) हैं।

(घ) प्रतीपम् ⇒ अक्षरार्थ है - जल के वेग के प्रतिकूल चलना। शब्दार्थ - प्रतिकूल है।
पत्नी का मुख्य कर्तव्य है पति-सेवा और उसकी आज्ञा का पालन। इसके विपरीत जाना समुचित और सम्यक् नहीं।

(ङ) युवतयः = तरुण स्त्रियाँ।
युवति = युवन् शब्द से स्त्रीलिंग में यूनस्तिः से ति प्रत्यय।
युवती = युवत + ङीष्। (अर्थ = पतिवाली)

(च) वामाः = विपरीत आचरण करनेवाली स्त्रियाँ।
वम् + ण (अ) = वाम, स्त्रीलिंग में आ।
ज्वलिति० से ण प्रत्यय या घञ् भावे से।
वामः कामः अस्त्यस्याः।

(छ) आधयः = मानसिक दुःख और विपत्ति (दुःख का कारण)
आधि = आधीयते दुःखमनेनेति।

23/7/2020

अलंकार -(क) वामा स्त्रियों में आचित्त का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

(ख) वामा स्त्रियां आधि के हेतु (कारण) रूप से हैं। कारण और कार्य में अभेद (एकरूपता) होने से हेतु अलंकार है।

(ग) गृहिणीपदम्- में साधर्म्य से तथा वामाः में वैधर्म्य (विपरीत आचरण होने) से अर्थान्तरन्यास है।

(घ) प्रस्तुतश्लोक में शास्त्रानुकूल मनोहर वचन होने से उपदिष्ट नामक नाटकीय लक्षण है। उपदिष्ट का लक्षण साहित्यदर्पण में दिया गया है-
"उपदिष्टं मनोहारि वाक्यं शास्त्रानुसारतः।"
(सामान्यदर्पण)

प्रस्तुत श्लोक शाकुन्तल के प्रसिद्ध चार श्लोकों में से एक श्लोक है।